पाठ 21

1. लूत और अब्राम के बीच क्या समस्या थी?

-चूंकि लूत और अब्राम दोनों के पास इतनी भेड़ें और मवेशी थे, इसलिए सभी जानवरों को खिलाने के लिए पर्याप्त घास नहीं थी।

2. लूत ने तराई में रहने का चुनाव क्यों किया?

-क्योंकि वहाँ उसकी भेड़ों और मवेशियों को चराने के लिए बहुत घास थी।

3. लूत ने तराई में जाने का गलत चुनाव क्यों किया?

-क्योंकि लूत ने परमेश्वर से नहीं पूछा कि क्या करना है।

-क्योंकि लूत ने परमेश्वर की सुनने से इंकार कर दिया।

4. क्या होगा अगर हम परमेश्वर को सुनने से इंकार कर दें?

-हम अनन्त अग्नि की झील पर जाएंगे।

5. क्या कई भेड़ें और मवेशी या धन हमें अनन्त आग की झील से बचाएंगे?

-नहीं।

6. क्या परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के लोगों की दुष्टता देखी?

-हां।

7. क्या हम परमेश्वर से कुछ भी छुपा सकते हैं जो हम सोचते हैं?

-नहीं।

8. क्या हम परमेश्वर से कुछ भी छुपा सकते हैं?

-नहीं।

9. क्या हम जो कुछ भी करते हैं उसे परमेश्वर से छिपा सकते हैं?

-नहीं।

10. लूत के तराई में चले जाने के बाद परमेश्वर ने अब्राम से क्या कहा?

-परमेश्वर ने कहा कि वह अब्राम को कनान देश देगा।

-परमेश्वर ने कहा कि अब्राम के सितारों के जितने वंशज होंगे।

-परमेश्वर ने कहा कि अब्राम के वंशज दूसरे देश में रहने के लिए चले जाएंगे, और 400 साल बाद, परमेश्वर उन्हें कनान वापस लाएगा।

11. परमेश्वर ने अब्राम को क्या नया नाम दिया था?

-अब्राहम।

12. परमेश्वर ने सारै को क्या नया नाम दिया था?

-सारा।

13. परमेश्वर ने अब्राम और सारै को नए नाम क्यों दिए?

-क्योंकि उनके कई वंशज होंगे।

14. हालाँकि सारा बहुत बूढ़ी और बंजर थी, फिर भी परमेश्वर ने क्या वादा किया था?

- कि सारा कई वंशजों की मां बनेगी।

- कि सारा का एक बेटा होगा।

15. इब्राहीम और सारा कितने साल के थे?

-इब्राहीम 100 और सारा 90 साल की थीं।

16. क्या ऐसा कुछ है जो परमेश्वर नहीं कर सकता?

-नहीं।

-अब्राहम और लूत अलग हो गए थे क्योंकि उनके सभी जानवरों को खिलाने के लिए पर्याप्त घास नहीं थी।

-इब्राहीम कहाँ चला गया?

-पहाड़ियों को।

- लूत कहाँ चला गया?

- तराई को।

- कौन से दो शहर तराई में थे?

-सदोम और अमोरा।

- सदोम और अमोरा के लोग कैसे थे?

- वे बहुत दुष्ट थे।

-क्या परमेश्वर को सदोम और अमोरा के लोगों की दुष्टता के बारे में पता था?

-हां।

- परमेश्वर को सदोम और अमोरा के लोगों की दुष्टता के बारे में कैसे पता चला?

-परमेश्वर सब कुछ देखता है।

-ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे परमेश्वर नहीं देखता।

-परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के लोगों की सारी दुष्टता देखी।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 18:20-21

20-तब यहोवा ने कहा, सदोम और अमोरा के विरुद्ध चिल्लाहट इतनी बड़ी और उनका पाप इतना भारी है

21-कि मैं नीचे जाकर देख लूंगा कि उन्होंने जो किया है, वह उतना ही बुरा है जितना कि उस चिल्लाहट का जो मुझ तक पहुंचा है। नहीं तो पता चल जाएगा।"

- सदोम और अमोरा के लोगों की दुष्टता के बारे में परमेश्वर लंबे समय से जानता था।

-सदोम और अमोरा के लोग परमेश्वर के बारे में भूल गए, लेकिन क्या परमेश्वर उनके बारे में भूल गए?

-नहीं।

-सदोम और अमोरा के लोग परमेश्वर के बारे में भूल गए, लेकिन क्या परमेश्वर उनके पापों को भूल गए?

-नहीं।

-अगर लोग परमेश्वर के बारे में भूल जाते हैं, तो क्या वह उन्हें भूल जाएगा?

-नहीं।

-अगर लोग परमेश्वर के बारे में भूल जाते हैं, तो क्या वह अपने पापों को भूल जाएगा?

-नहीं।

-परमेश्वर पाप के बारे में नहीं भूल सकते।

-परमेश्वर को हर पाप की सजा देनी चाहिए।

-परमेश्वर को हर पाप की सजा क्यों देनी चाहिए?

-क्योंकि ईश्वर पूर्ण है।

-क्योंकि परमेश्वर ने लोगों को परिपूर्ण बनाया है।

-क्योंकि हर पाप परमेश्वर के खिलाफ है।

-परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के लोगों को उनके पापों के लिए तुरंत दंड क्यों नहीं दिया?

-क्योंकि परमेश्वर चाहता था कि वे अपने पापों का पश्चाताप करें।

-क्योंकि परमेश्वर उन्हें बचाना चाहते थे।

-नूह के समय में, परमेश्वर ने लोगों के अपने पापों से पश्चाताप करने के लिए कितने समय तक प्रतीक्षा की?

-120 साल।

- लोगों ने फिर भी पश्चाताप नहीं किया, परमेश्वर ने क्या किया?

-परमेश्वर ने एक बाढ़ भेजी जिसने सभी लोगों को नष्ट कर दिया।

-परमेश्वर इंतजार करते हैं कि लोग अपने पापों से पश्चाताप करें।

-लेकिन अगर लोग पश्चाताप नहीं करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें दंडित करते हैं।

-परमेश्वर आज लोगों को उनके पापों के लिए तुरंत दंड क्यों नहीं देते?

-क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि वे अपने पापों का पश्चाताप करें।

-क्योंकि परमेश्वर उन्हें बचाना चाहते हैं।

-क्या परमेश्वर केवल लोगों को धमकाते हैं, लेकिन उनके पापों की सजा नहीं देते?

-नहीं।

-परमेश्वर सभी पापों की सजा देंगे।

-जब परमेश्वर के पास पापियों को दंडित करने का समय होता है, तो क्या कोई परमेश्वर को रोक सकता है?

-नहीं।

-जब परमेश्वर के लिए पापियों को दंडित करने का समय आता है, तो कोई भी परमेश्वर की सजा से नहीं बच सकता।

-एक दिन, परमेश्वर ने अपने दो स्वर्गदूतों को सदोम में भेजा।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 19:1-3

1-दो स्वर्गदूत सांफ को सदोम में आए, और लूत नगर के द्वार पर बैठा था। उन्हें देखकर वह उन से भेंट करने को उठा, और भूमि पर मुंह करके दण्डवत् किया।

2- "हे मेरे प्रभुओं," उसने कहा, "कृपया अपने दास के घर की ओर मुड़ें। आप अपने पैर धो सकते हैं और रात बिता सकते हैं, और फिर सुबह जल्दी अपने रास्ते पर जा सकते हैं। ” "नहीं," उन्होंने उत्तर दिया, "हम चौक में रात बिताएंगे।"

3-लेकिन लूत ने इतना जोर दिया कि वे उसके साथ गए और उसके घर में प्रवेश किया। और उस ने उनके लिये बिना खमीर के रोटी पकाई, और उन्होंने खाया।

-परमेश्वर ने दो स्वर्गदूतों को सदोम में क्यों भेजा?

-परमेश्वर लूत और उसके परिवार को बचाना चाहते थे।

- पहले लूत सदोम के पास रहता था।

-अब, लूत सदोम में रह रहा था।

-इससे पहले, लूत सदोम की दुष्टता के पास रहता था।

-अब, लूत सदोम की दुष्टता के भीतर रह रहा था।

- क्या आप देखते हैं कि लूत के साथ पाप क्या कर रहा था?

-पाप लूत को उसकी दुष्टता के और करीब ले जा रहा था।

-यह वही है जो पाप सभी लोगों के साथ करता है।

-पाप लोगों को अपनी दुष्टता के करीब और करीब लाता है।

-जैसे पाप ने लूत को सदोम में खींच लिया, वैसे ही पाप सभी लोगों के लिए क्या करता है?

-पाप लोगों को अपनी दुष्टता के करीब और करीब लाता है।

- जब वे लूत के पास गए तो स्वर्गदूतों का क्या हुआ?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 19:4-9

4- उनके सोने से पहिले, सदोम नगर के चारोंओर के सब पुरूषोंने, क्या जवान क्या बूढ़े, सब ने उस भवन को घेर लिया।

5-उन्होंने लूत को पुकारा, “वे पुरुष कहाँ हैं जो आज रात तुम्हारे पास आए हैं? उन्हें हमारे पास बाहर ले आओ ताकि हम उनके साथ सेक्स कर सकें।”

6 लूत उन से भेंट करने के लिथे बाहर गया, और अपके पीछे का द्वार बन्द कर लिया

7-और कहा, “नहीं, मेरे दोस्तों। यह दुष्ट काम मत करो।

8-देखो, मेरी दो बेटियाँ हैं जो कभी किसी पुरुष के साथ नहीं सोईं। मुझे उन्हें तुम्हारे पास लाने दो, और तुम उनके साथ वह कर सकते हो जो तुम्हें पसंद है। परन्तु इन आदमियों के साथ कुछ न करना, क्योंकि वे मेरी छत के नीचे आ गए हैं।”

9- "हमारे रास्ते से हट जाओ," उन्होंने जवाब दिया। और उन्होंने कहा, "यह आदमी यहाँ एक विदेशी के रूप में आया था, और अब वह न्यायाधीश की भूमिका निभाना चाहता है! हम आपके साथ उनसे भी बुरा व्यवहार करेंगे।" वे लूत पर दबाव डालते रहे और दरवाज़ा तोड़ने के लिए आगे बढ़े।

-सदोम और अमोरा के लोग बहुत दुष्ट थे।

-लोगों ने कई, कई झूठ बोले।

-लोगों ने दूसरे लोगों पर झूठा आरोप लगाया।

- लोगों ने अपने पड़ोसियों को शाप दिया।

-लोगों ने वही चुराया जो दूसरे लोगों का था।

-लोग दूसरे पुरुषों की पत्नियों के साथ सोते थे।

-लोगों ने अन्य लोगों को मार डाला।

-पुरुष दूसरे पुरुषों के साथ भी सोते थे।

-क्या आज लोग सदोम और अमोरा के लोगों की तरह हैं?

-हां।

-क्या हम सदोम और अमोरा के लोगों की तरह हैं?

-हां।

-हम सदोम और अमोरा के लोगों की तरह कैसे हैं?

-हमने बहुत से झूठ बोले हैं।

-हमने दूसरे लोगों पर झूठा आरोप लगाया है।

-हमने अपने पड़ोसियों को शाप दिया है।

-हमने चोरी की है जो दूसरे लोगों का है।

-हम अन्य पुरुषों की पत्नियों के साथ सोए हैं।

-हमने दूसरों को मार डाला है।

-फिर स्वर्गदूतों ने क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 19:10-17

10 परन्तु भीतर के लोगों ने पहुंचकर लूत को घर में खींच लिया और द्वार बंद कर लिया।

11 तब उन्होंने घर के द्वार पर जो जवान या बूढ़े थे, उन को अन्धे से मारा, कि वे द्वार न पा सके।

12-उन दोनों व्यक्तियों ने लूत से कहा, क्या यहां तेरा कोई और है, अर्थात दामाद, या बेटे या बेटियां, वा नगर में और कोई जो तेरा है? उन्हें यहाँ से निकालो,

13-क्योंकि हम इस स्थान को नष्ट करने जा रहे हैं। अपनी प्रजा के विरुद्ध यहोवा की दोहाई इतनी अधिक है, कि उस ने हम को उसको नाश करने के लिथे भेजा है।”

14 तब लूत ने निकलकर अपके दामादोंसे बातें की, जिन्हें अपके पुत्रियोंको ब्याह करने का वचन दिया गया था। उस ने कहा, फुर्ती करके इस स्थान से निकल जा, क्योंकि यहोवा नगर को नाश करने ही पर है। लेकिन उसके दामाद को लगा कि वह मजाक कर रहा है।

15-भोर के आगमन के साथ, स्वर्गदूतों ने लूत से आग्रह किया, "जल्दी करो! अपनी पत्नी और अपनी दोनों पुत्रियों को जो यहां हैं, ले जाओ, नहीं तो जब नगर को दण्ड दिया जाएगा, तब तुम नष्ट हो जाओगे।”

16 जब लूत ने हिचकिचाया, तब उन पुरूषोंने उसका हाथ, और उसकी पत्नी, और दो बेटियोंका हाथ पकड़ लिया, और नगर से सुरक्षित निकाल ले गए, क्योंकि यहोवा उन पर दया करता था।

17 ज्योंही वे उन्हें बाहर ले आए, उनमें से एक ने कहा, “अपना प्राण बचाकर भागो! पीछे मुड़कर न देखें, और मैदान में कहीं भी न रुकें! पहाड़ों पर भाग जाओ, नहीं तो तुम बह जाओगे!”

-स्वर्गदूतों ने लूत, उसकी पत्नी और दो बेटियों का हाथ पकड़कर उन्हें शहर से बाहर निकाल दिया।

-क्या परमेश्वर ने लूत को बचाया क्योंकि वह अच्छा था?

-नहीं।

-परमेश्वर ने लूत को नहीं बचाया क्योंकि वह अच्छा था।

-हालांकि लूत सदोम के लोगों की तरह नहीं था, लूत एक पापी पैदा हुआ था।

-लूत भी सभी लोगों की तरह पाप में पैदा हुआ था।

-परमेश्वर ने लूत को क्यों बचाया?

-क्योंकि लूत जानता था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-क्योंकि लूत जानता था कि उसका पाप अनन्त मृत्यु लाता है।

-क्योंकि लूत जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-क्योंकि लूत को विश्वास था कि परमेश्वर उसे बचाने के लिए उद्धारकर्ता को भेजेगा।

-परमेश्वर हमेशा उनकी रक्षा करते हैं जो उस पर विश्वास करते हैं।

-क्या हुआ जब स्वर्गदूत लूत और उसके परिवार को शहर से बाहर ले गए?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 19:24-25

24 तब यहोवा ने सदोम और अमोरा पर यहोवा की ओर से जलती हुई गन्धक आकाश में से बरसाई।

25 इस प्रकार उस ने उन नगरोंऔर सारे मैदान को, और उन सब को जो नगरोंमें रहते थे, और देश के सब वनोंको भी उलट दिया।

-परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के लोगों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

-परमेश्वर सभी पापों से नफरत करता है।

-परमेश्वर सभी पापों की सजा देते हैं।

-परमेश्वर सभी पापों को अनन्त मृत्यु से दंडित करते हैं।

-नूह के दिनों में, परमेश्वर ने सभी लोगों को बाढ़ से नष्ट कर दिया।

-सदोम और अमोरा में, परमेश्वर ने सभी लोगों को आग से नष्ट कर दिया।

-जब स्वर्गदूतों ने लूत, उसकी पत्नी और उसकी दोनों बेटियों को सदोम से बाहर निकाला, तो उन्होंने कहा कि वे पीछे मुड़कर न देखें।

-लेकिन लूत की पत्नी ने आज्ञा नहीं मानी।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 19:26

26 परन्तु लूत की पत्नी ने पीछे मुड़कर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई।

-परमेश्वर ने लूत की पत्नी को नमक के खम्भे में बदल दिया।

-परमेश्वर ने लूत की पत्नी को नमक के खम्भे में क्यों बदल दिया?

-क्योंकि लूत की पत्नी ने परमेश्वर की अवज्ञा की, और पीछे मुड़कर देखा।

-लूत की पत्नी ने पीछे मुड़कर क्यों देखा?

-क्योंकि वह अपने पाप से प्यार करती थी।

-क्योंकि वह अपना पाप नहीं छोड़ना चाहती थी।

-परमेश्वर पाप से नफरत करता है।

-परमेश्वर हमेशा पाप की सजा देते हैं।

-परमेश्वर हमेशा अनन्त मृत्यु से पाप की सजा देते हैं।

-यदि आप लूत की पत्नी की तरह अपने पाप से प्यार करते हैं, तो परमेश्वर आपको मौत की सजा देंगे।

-यदि आप लूत की पत्नी की तरह अपना पाप नहीं छोड़ना चाहते हैं, तो परमेश्वर आपको मौत की सजा देंगे।